भारत और पाकिस्तान के विशेष दूतों ने तालिबान के साथ वार्ता में भाग लिया

प्रीलिम्स के लिये:

[ओस्लो समझौता](), वेस्ट बैंक, गाजा पट्टी

मेन्स के लिये:

भारत-अफगानिस्तान संबंध: महत्त्व और आगे की राह

चर्चा में क्यों?

नॉर्वे सरकार द्वारा ओस्लो शांति सम्मेलन के अवसर पर वार्ता में गतिरोध को समाप्त करने के प्रयास में तालिबान के प्रतिनिधियों ने इस सप्ताह भारतीय और पाकिस्तानी विशेष दूतों एवं अधिकारियों के साथ-साथ अन्य अंतर्राष्ट्रीय राजनयिकों से मुलाकात की।

ओस्लो समझौता:

- ओस्लो समझौता **इज़रायल** और **फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइज़ेशन (PLO)** के बीच समझौते की एक कड़ी है जो ओस्लो प्रक्रिया की शुरुआत को चिह्नित करती है। यह एक शांति प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य इज़रायल-फिलिस्तीनी संघर्ष को हल करना है।
- ओस्लो प्रक्रिया-ओस्लो, नॉर्वे में गुप्त वार्ताओं के बाद प्रारंभ हुई, जिसके परिणामस्वरूप PLO द्वारा इज़रायल की मान्यता और फिलिस्तीनी लोगों के प्रतिनिधि के रूप में इज़रायल द्वारा मान्यता और द्विपक्षीय वार्ताओं में भागीदार के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।
- **ओस्लो प्रथम समझौता (1993):**
  - वाशिंगटन, डीसी में हस्ताक्षर किये गए।
  - वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में फिलिस्तीन के अंतरिम स्वशासन व्यवस्था के लिये एक रूपरेखा प्रस्तुत की और आगे की वार्ताओं के लिये एक समय सारिणी भी निर्धारित की गई।
- **ओस्लो द्वितीय समझौता (1995):**
  - वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी पर अंतरिम समझौते को आमतौर पर ओस्लो द्वितीय समझौता के रूप में जाना जाता है।

भारत के लिये अफगानिस्तान का महत्त्व:

- **मध्य एशिया का प्रवेश द्वार:** अफगानिस्तान **मध्य एशियाई गणराज्यों (CAR)** का प्रवेश द्वार है, जो प्राकृतिक संसाधनों और भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के लिये संभावित बाज़ारों में समृद्ध हैं।
- **पाकिस्तान और चीन के प्रति संतुलन:** एक स्थिर और मैत्रीपूर्ण अफगानिस्तान भारत को पाकिस्तान से उत्पन्न आतंकवाद, उग्रवाद और कट्टरपंथ के खतरों को रोकने में मदद कर सकता है।
- **भारत की सॉफ्ट पावर सहायता में भागीदार:** भारत ने अफगानिस्तान में विभिन्न परियोजनाओं, जैसे सड़कों, बाँधों, स्कूलों, अस्पतालों, संसद भवन आदि में $ 3 बिलियन से अधिक का निवेश किया है।
  - भारत अफगानिस्तान को छात्रवृत्ति, प्रशिक्षण, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और मानवीय सहायता भी प्रदान करता है।
- **सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संबंध:** दोनों देश बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म, सूफीवाद और मुगल साम्राज्य की एक सांस्कृतिक विरासत को साझा करते हैं। पूर्व राष्ट्रपति हामिद करज़ई समेत कई अफगान नेताओं ने भारत में पढ़ाई की है।

तालिबान के अधिग्रहण का भारत के हितों पर प्रभाव:

- **सुरक्षा संबंधी खतरे:**

    - तालबिान को पाकस्तिान के जैश-ए-मुहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे भारत वरिोधी आतंकवादी समूहों के प्रतनिधिऔिर समर्थक के रूप में देखा जाता है।
    - तालबिान चीन के समीप भी है, जो इस क्षेत्र में भारत का सामरकि प्रतद्विंद्वी है।
- **प्रभाव:**
    - भारत का तालबिान के साथ कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था परंतु पछिली सरकार और उसके संस्थानों में भारी नविश कयिा था।
    - भारत ने अफगानस्तिान के माध्यम से मध्य एशयिाई गणराज्यों तक अपनी पहुँच भी खो दी, जो इसकी कनेक्टविटिी और ऊर्जा परयिोजनाओं का एक महत्त्वपूर्ण हस्सिा था।
- **व्यापार और वकिास:**
    - तालबिान ने पाकस्तिान के माध्यम से कार्गो की आवाजाही बंद कर दी है एवं अफगानस्तिान में भारत की सहायता और परयिोजनाओं के भवषि्य पर अनशि्चतिता पैदा कर दी है।
    - भारत ने अफगानस्तिान में बुनयिादी ढाँचे, स्वास्थ्य, शकि्षा, कृषआिद जिैसे वभिन्नि क्षेत्रों में 3 बलियिन अमेरकिी डॉलर से अधकि का योगदान दयिा था।
- **मानवीय संकट:**
    - हज़ारों अफगानी, जन्होंने भारत के साथ काम कयिा है अथवा जनिका भारत के साथ पारवािरकि संबंध है, तालबिान द्वारा दमन के कारण शरण तथा सुरक्षा की मांग कर रहे हैं।
    - भारत ने काबुल से अपने नागरकिों और अफगान सहयोगयिों को वापस लाने के लयि **ऑपरेशन देवी शक्त**ि नामक एक नकिासी मशिन शुरू कयिा है।

स्थतिपिर नयिंत्रण के भारत के प्रयास:

- **संतुलति दृष्टकिोण अपनाना: मानवाधकिारों, आतंकवाद और अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार के बारे में चतिा व्यक्त करते हुए** अत्यधकि संरेखण अथवा टकराव से बचने के लयि भारत को अफगानस्तिान के साथ संतुलति दृष्टकिोण अपनाना चाहयि।
    - भारत व्यापार, सांस्कृतकि आदान-प्रदान और क्षेत्रीय कनेक्टविटिी जैसे सामान्य हति के क्षेत्रों पर भी ध्यान दे सकता है।
- **अफगान सुलह का समर्थन:** भारत, **अफगानस्तिान में एक समावेशी और प्रतनिधिसिरकार** के प्रयासों का सक्रयि रूप से समर्थन कर सकता है। जसिमें एक समावेशी राजनीतकि प्रक्रयिा की वकालत करना शामलि है, जो देश में सभी जातीय एवं धार्मकि समूहों के हतिों को समायोजति करता है।
- **क्षेत्रीय खलिाड़यिों के साथ संबंध:** भारत को अपने प्रयासों का समन्वय करने और अफगानस्तिान में स्थरिता के लयि एक सामूहकि दृष्टकिोण सुनशि्चति करने हेतु क्षेत्रीय खलिाड़यिों, वशिेष रूप से पड़ोसी देशों के साथ संबंध बनाना चाहयि।
    - इसमें सामान्य मामलों को दूर करने और क्षेत्रीय स्थरिता को बढ़ावा देने के लयि ईरान, रूस तथा मध्य एशयिाई देशों के साथ सहयोग करना शामलि है।
- **वकिास सहायता पर ध्यान:** बुनयिादी ढाँचा परयिोजनाएँ, शकि्षा एवं मानवीय सहायता प्रदान करके अफगानस्तिान के वकिास में भारत का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।
    - तालबिान के अधग्रिहण के बावजूद भारत उन वकिास पहलों का समर्थन करना जारी रख सकता है जो प्रत्यक्ष रूप से अफगान लोगों को लाभान्वति करते हैं, जैसे कबिुनयिादी ढाँचा वकिास, स्वास्थ्य सेवा, शकि्षा और क्षमता नरि्माण।
- **अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी को मज़बूत करना:** भारत को संयुक्त राज्य अमेरकिा, यूरोपीय संघ, संयुक्त राष्ट्र और **दक्षणि एशयिाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (South Asian Association for Regional Cooperation- SAARC/सार्क)** जैसे क्षेत्रीय संगठनों सहति अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के साथ मलिकर काम करना चाहयि, ताकअिफगानस्तिान में उभरती स्थतिकिो सामूहकि रूप से उजागर कयिा जा सके। सहयोगात्मक प्रयास देश में अधकि स्थरि तथा सुरक्षति वातावरण को आकार देने में मदद कर सकते हैं।

स्रोत: द हदिू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-and-pakistan-special-envoys-participate-in-talks-with-taliban